दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जनवरी-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष–तेइसवां | अंक–नौवां | जनवरी–2026

|| 2 || परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले **भजन–अभ्यास**

|| 3 || परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा **नये साल का संदेश**

|| 5 || सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज **गुरु महिमा**

|| 17 || परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से **बिन बोलयां सब कुछ जांणदा**

|| 19 || परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब **कृपाल अमृत**

|| 29 || परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले दिया संदेश **नाम की खुशबू**

|| 32 || सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी **धन्य अजायब**

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 286 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

17 जून 1983

बगोटा, कोलम्बिया

सब सन्त इस बात पर जोर देते गए हैं कि परमात्मा आपके अंदर हैं। बाहर की आँखें उस परमात्मा को नहीं देख सकती अगर हमारे अंदर सच्ची तड़प है, हमारे दिल में सच्चा प्यार है तो हमें चाहिए कि आँखें बंद करके अंदर ही उस परमात्मा को ढूंढें।

अभ्यास को बोझ न समझें, प्रेम प्यार से करें। प्यार से काम करें तो परमात्मा जरूर खुश होते हैं। हम जिस काम के लिए इकट्ठे हुए हैं, वह काम करें। सबने प्रेम–प्यार से अपना काम करना है। हमने किसी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी क्योंकि हर आदमी अपने काम में व्यस्त है। क्यों न हम भी अपना काम दिल लगाकर करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नये साल का संदेश

प्यारेयो,

नये साल के इस अवसर पर गुरु का प्यार और दया आपके ऊपर हमेशा बनी रहे। परमात्मा दयालु हैं, वे इस संसार में गरीब और दुखी आत्माओं को बचाने के लिए खुद ही इंसानी जामें में आते हैं। वे ईसा मसीह के रूप में आए, अब हम उनके जन्मदिन को याद करते हैं। उन्होंने उस समय के लोगों को प्रेम के सच्चे मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन किया।

सभी गुरु साहिबानों ने आदेश दिया है, ''परमात्मा के प्रति प्रेम बनाए रखें, विनम्र रहें। काम, क्रोध और लोभ की तरफ पीठ करके दया, सत्य और संतोष बनाए रखें।'' जो शिष्य उनके वचनों पर चले वे खुश रहे।

जब यीशु इस संसार से चले गए तो ईसा मसीह की शक्ति कभी मरी नहीं बल्कि बार-बार आती रही। उनकी महिमा के बारे में क्या कहा जा सकता है। प्यारे महाराज कृपाल आए, उन्होंने हम पर अपनी दया बरसाई और वे आज भी दया बरसा रहे हैं। हमें इस नये साल में अपने अंदर गुरु के प्रति सच्ची विनम्रता, सच्चा आदर और सच्चा प्रेम पैदा करना चाहिए, ये सन्तमत में हमारी यात्रा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। अगर ये सब हमारे पास हैं तो इस मार्ग पर हमारी तरक्की को कोई रोक नहीं सकता इसलिए मैं सदा ही अरदास करता हूँः

तक लै मना ओऐ, कृपाल प्यारे ताईं *x2*

1. *दर्शन गुरु दा जिसने कीता,*
   अमृत नाम प्याला पीता, x2
   पक लै मना ओऐ, कृपाल सहारे ताईं,   तक लै.....

2. जिसने वी दिल विच, गुरु नूं बिठा लया,
गेड़ा चौरासी वाला मुका लया, x2
रख लै मना ओऐ, गुरु प्यार नजारे ताईं, तक लै.....

3. गुरु दा प्यार, जिस हिरदे च आऐगा,
सच्चखंड दा बूहा खुल जाऐगा, x2
रट लै मना ओऐ, सच्चे गुरु दे इशारे ताईं तक लै.....

4. दुखियां दे दुख, इक पल च निवार दा,
ठलया ना जाऐ ओह समुन्द्र प्यार दा, x2
दया जद होवे, इक पल विच तारे साईं, तक लै.....

5. दस्सी ना कहानी जाऐ, गुरु दे प्यार दी,
करां की सिफत मैं सच्चे दिलदार दी, x2
दस्स लै 'अजायब', कृपाल दे नजारे ताईं, तक लै.....

उनके पूरे प्यार के साथ,
आपका प्यारा,

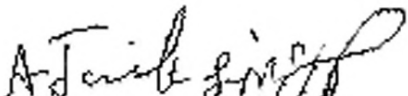

अजायब सिंह

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु महिमा

DVD-502(2)

02 जुलाई 1980 गुरु रामदास जी की बानी सेनबॉर्टन, अमेरिका

ज्यों जननी सुत जण पालती राखै नदर मंझार।।

यह बानी श्री गुरु रामदास जी महाराज की है, आप फरमाते हैं कि हमें हमेशा नेक पुरुषों की संगत और सोहबत में रहना चाहिए। ऐसा काम भूलकर भी नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए, हमारी कौम, हमारे धर्म के लिए हानिकारक हो। हमें नेक बनना है, अपने ऊपर दया करनी है, अपनी औलाद पर भी दया करनी है और उन्हें नेक बनाना है। औलाद को नेक बनाना माता–पिता का फर्ज है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने अपनी औलाद को नेक बनाना है वह पहले खुद नेक बनें।'' बच्चों पर माता–पिता का बहुत असर पड़ता है।

एक बादशाह जंगल में गया, उसे प्यास लगी। वहाँ एक लक्कड़हारा था, उसने बादशाह को पानी पिलाया तो बादशाह के प्राणों को शान्ति मिली। बादशाह ने जब उसे लकड़ियां उठाते हुए देखा तो उसे तरस आया कि यह अच्छा आदमी है क्यों न मैं इसे चंदन का बाग दे दूं। बादशाह ने उसे शहर के नजदीक एक चंदन का बाग दे दिया।

बेचारे लक्कड़हारे को पता नहीं था कि कीमती चंदन बहुत मंहगा है। वह बाग पाकर इतना खुश नहीं हुआ जितना खुश होना चाहिए था। उसने सोचा कि पहले मैं लकड़ियां दूर ले जाकर कोयले बनाता था, अब मुझे शहर के नजदीक बाग मिल गया है, मैं इसके कोयले बनाया करूंगा। उसने चंदन के कोयले बना दिए। अब उसने कोयलों से क्या कमाना था।

एक दिन फिर बादशाह उस तरफ से निकला तो उसके दिल में ख्याल आया कि लक्कड़हारा उस बाग के कारण बहुत मालोमाल हो गया होगा

और रहने के लिए अच्छा मकान बना लिया होगा लेकिन बादशाह ने देखा कि उसने पूरे बाग के चंदन को जलाकर कोयला बना दिया है। लक्कड़हारे के पास कोयला हिलाने वाली एक छोटी सी लकड़ी थी। बादशाह ने एक समझदार आदमी से उस लकड़ी की कीमत पूछी तो उसने बताया कि इसकी कीमत पाँच–छह सौ रूपये है। अब लक्कड़हारा बहुत पछताया कि यह चंदन इतना कीमती था तो मैंने इसके कोयले क्यों बनाए?

महात्मा का भाव इतना ही है कि परमात्मा बादशाह हैं और हम लक्कड़हारे हैं। हम कोई शुभकर्म करते हैं तो परमात्मा दया करके हमें इंसानी जामा देते हैं। इस जामें में स्वाँस चंदन हैं। जब हम विषय रूपी अग्नि में स्वाँसों को बर्बाद करते हैं तो उस समय हम लक्कड़हारे की तरह पछताते हैं अगर साध–संगत करना, नाम जपना इतना अच्छा है तो हमने इतने कीमती स्वाँस विषय–विकारों में और बुरी संगत में क्यों बर्बाद किए? महात्मा हमें बताते हैं कि फिर पछताने से कुछ नहीं बनता जब चिड़िया खेत चुग जाती है, हमें पहले सोचना चाहिए। फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा जिन्नी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि।।
मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि।।
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा।।
अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा।।

महात्मा हमें समझाते हैं कि यह चलती–फिरती दुनिया जो हमें नजर आ रही है, इसे कोई पैदा करने वाला और पालन करने वाला है। इस रचना के पीछे कोई गुप्त ताकत जरूर काम कर रही है जिसे महात्माओं ने वाहेगुरु, अल्लाह, राम–रहीम, गॉड आदि कई नामों से याद किया है। परमात्मा हमें पैदा करके बेखबर नहीं हैं, वे जरूर हमारी पालना करते हैं, हमारी रक्षा करते हैं।

जिस तरह माता बच्चे को पैदा करके बेखबर नहीं होती, उसे नहलाती है, उसका हर किस्म का ख्याल रखती है। अगर बच्चा पेशाब करता है

तो माता बच्चे को फौरन सूखी जगह पर करती है। वह बच्चे की हर तरह से परवरिश करती है क्योंकि बच्चा अंजान है, उसे पता नहीं कि मैंने कब और कितना खाना खाना है, इसकी समझ माता को ही होती है। इसी तरह परमात्मा भी हमारी परवरिश करते हैं, हमारा ख्याल रखते हैं और साँस–साँस के साथ हमारी रक्षा करते हैं।

जिन महात्माओं की आँखें खुली होती हैं, वे कहते हैं कि कोई हमारी पालना कर रहा है, कोई हमारी चिंता करने वाला भी है। जिनकी आँखें खुली नहीं होती वे अपने आप पर मान करते हैं। हम जितना अपने आप पर मान करते हैं और परमात्मा को दूर समझते हैं, हम उतना ही दुखी और परेशान होते हैं।

गुरु नानकदेव जी पंजाब में विचर रहे थे, प्रेमियों से मिलने जा रहे थे। मर्दाना मक्की का दाना खाने लगा। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर कहा, ''देख मर्दाना, यह दाना लाहौर के एक सफेद मुर्गे ने खाना है।'' मर्दाना की आँखें खुली हुई नहीं थी, वह कहने लगा, ''जब दाना मेरे हाथ में है तो मैंने क्यों नहीं खाना?'' मर्दाना बहुत जल्दी से उस दाने को मुँह में डालने लगा तो वह दाना उसकी नाक में चला गया। बहुत उपाय किए, बहुत लोगों के पास गए लेकिन वह दाना नहीं निकला आखिर नाक सूज गया।

गुरु नानकदेव जी अंदरूनी राज के वाकिफ थे, वे मर्दाना को साथ लेकर लाहौर की तरफ चल पड़े। आगे चलकर देखा तो वह सफेद मुर्गा आ रहा था। गुरु साहब ने कहा, ''मर्दाना, इस मुर्गे ने वह दाना खाना है।'' थोड़ा आगे जाकर मर्दाना को छींक आई, दाना बाहर गिर गया और मुर्गे ने उसे उठा लिया। गुरु साहब कहते हैं:

नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे।।
जहा दाणे तहाँ खाणे नानका सचु हे।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब परमात्मा सबकी रोटी–रोजी लिखने लगे और जब सन्तों की बारी आई तो उनके हाथ पर रखकर नीचे से हाथ मार दिया और सारा बिखेर दिया कि अब तुम इसे चुगो।'' इसलिए महात्मा दुनिया में परमात्मा का बिखेरा हुआ अन्न–पानी चुगते हैं।

गुरु नानकदेव जी एक गाँव में गए, वहाँ के लोगों ने उनकी बहुत सेवा की। गुरु नानक साहब ने उन लोगों से कहा, ''आप लोग उजड़ जाएं।'' दूसरे गाँव में गए तो उस गाँव के लोगों ने उन्हें पत्थर मारे। वे कहने लगे, ''आप लोग यहीं बसते रहें।'' मर्दाना कहने लगा, ''यह आपकी अच्छी लीला है जिन्होंने आपकी सेवा की उन्हें तो आपने कहा उजड़ जाएं और जिन्होंने पत्थर मारे उन्हें कहा बसते रहें।''

गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''मर्दाना, तू सन्तों का भाव नहीं समझा। इस गाँव का एक भी आदमी(जिन्होंने सेवा की थी) जिस गाँव में जाएगा वहाँ के लोगों को प्रभु की तरफ लगाएगा, सतसंग करेगा और लोगों को सही ढंग से बसने की युक्ति बताएगा। जिन लोगों ने पत्थर मारे हैं वे यहीं रहें तो ठीक हैं। ये जिस गाँव में जाएंगे उस गाँव को ही बिगाड़ देंगे।''

हमारे देखने की बात है कि सन् 1947 से पहले महाराज सावन सिंह जी के सतसंगी लाहौर, रावलपिंडी, मुल्तान, पेशावर साइड से थे लेकिन जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान का बँटवारा हुआ तो उस वक्त वहाँ से जो लोग दिल्ली, चंडीगढ़ की तरफ गए उन्होंने वहाँ जाकर सतसंग शुरु किए और सन्तमत फैलाया। आज आपको हिन्दुस्तान के कोने–कोने में सन्तमत के जानकार और नामलेवा मिलेंगे, बँटवारे के बाद हर जगह सन्तमत फैल गई।

अंतर बाहर मुख दे गिरास खिन खिन पोचार।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं कि जिस तरह माता बच्चे को पैदा करके बेखबर नहीं होती, अंदर बाहर आते–जाते भी बच्चे का ख्याल रखती है, पल–पल बच्चे की संभाल करती है, उसे दूध पिलाती है इसी

तरह परमात्मा हमारी साँस–साँस के साथ रक्षा करते हैं। उन्हें हमारा हमसे ज्यादा फिक्र है।

त्यों सतगुरु गुरसिख राखता हर प्रीत प्यार।।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि जब परमात्मा हमारे ऊपर दया करते हैं तो अपनी कला किसी इंसान में रखते हैं क्योंकि गाय–भैंस की जुबान हमें समझ नहीं आएगी इसलिए परमात्मा हमारे जैसे इंसान बनकर हमारे बीच आकर रहते हैं। गुरु और परमात्मा एक ही हस्ती हैं लेकिन गुरु संसार मंडल पर इंसान का चोला धारण करके आ जाते हैं।

जब तक गुरु संसार मंडल पर हैं वे हमारे हर सवाल का जवाब देते हैं, सतसंग में बैठकर हमें हमारी गलतियां बताते हैं। सतसंग के जरिए हमारे अंदर प्यार पैदा करते हैं और हमें उस 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ते हैं जो उनके अंदर प्रकट है। जो भी आत्मा सतगुरु के जरिए सच्चखंड पहुँची सब यही कहती हैं कि गुरु और परमेश्वर एक ही हस्ती का नाम है।

गुरु परमेसरु इकु जाणि।।

कबीर साहब जब रानी इन्द्रमति को सच्चखंड लेकर गए तो वे सतपुरुष के तख्त पर बैठे थे। इन्द्रमति ने कहाः

सतपुरुष तुम दास कहाए, ए शोभा तुम को कस भाए।

आपने मुझे बताया ही नहीं, आप यही कहते रहे कि मैं दास हूँ, मैं सेवादार हूँ। कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैं यह कहता कि मैं कुलमालिक हूँ तो तुम्हें ऐतबार नहीं आना था, अब जो तेरी इच्छा है तू कर ले।''

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जिस तरह माता बच्चे का ख्याल रखती है उसी तरह गुरु अपने शिष्यों की संभाल करते हैं। गुरु ने अपना काम बहुत भरोसे और धीरज के साथ चलाया होता है। गुरु अपने शिष्यों से कभी बेखबर नहीं होते, गुरु को हमेशा अपने शिष्यों की बेहतरी का ख्याल

रहता है। गुरु पहले हमें सतसंग के जरिए समझाते हैं, प्रेम का रास्ता अपनाते हैं अगर हम प्रेम–प्यार से नहीं समझते तो वे कोई और रास्ता अपनाते हैं लेकिन उन्होंने दृढ़विश्वास के साथ हमें नामदान दिया होता है। वे एक दिन हमें जरूर सच्चखंड पहुँचाते हैं।''

बच्चे को पता नहीं कि यह जिंदगी कितनी कीमती है अगर बच्चा माता से जहर मांगे तो माता कभी नहीं देती। इसी तरह अगर शिष्य गुरु से विषय–विकारों की चीजें माँगता है जो उसके लिए हानिकारक है तो गुरु उसे वे चीजें कभी नहीं देंगे क्योंकि उन्हें शिष्य की बेहतरी का ख्याल होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग दुनियादारी की चीजें माँगते हैं कि हमारे घर बच्चा हो जाए, बीमारी दूर हो जाए, हमारा मुकदमा फतह हो जाए, हमें दुनिया का धन–पदार्थ मिल जाए ऐसे लोग सन्तों के पास न आएं क्योंकि सन्तों के पास नाम है। जिस दुकान पर हीरे हैं अगर हम उस दुकान पर जाकर कोयला माँगे जो वहाँ पर है ही नहीं बेशक हम उस दुकानदार को भला–बुरा कहें, जब उसके पास हीरे हैं अगर हीरे माँगेगे तो हीरे मिल जाएंगे।''

गुरु अपने शिष्यों को प्रीत प्यार के साथ रखते हैं, गुरु को शिष्य अपनी औलाद से कई गुना प्यारे होते हैं। उनकी औलाद तो सिर्फ दुनियावी जायदाद प्राप्त कर सकती है लेकिन उन्होंने शिष्यों को रूहानी जायदाद देनी होती है।

मेरे राम हम बारक हरप्रभ के हैं इयाणे।।
धंन धंन गुरु गुर सतगुर पांधा जिन हर उपदेस दे कीए सिआणे।।

गुरु रामदास जी अपने सतगुरु की महिमा बयान करते हैं कि हम आपके नादान चालीस दिन के बच्चे जैसे हैं हमें कोई अक्ल नहीं। हमें ऐसा टीचर मिला जिसने नाम दिया, अपना उपदेश दिया। हम रूहानियत में बिल्कुल अंजान थे, हमें समझदार कर दिया और सीधा राह बता दिया।

जैसी गगन फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली।।
ओह राखै चीत पीछै बिच बचरे नित हिरदै सार समाली।।

जैसे कूंज आकाश में उड़ती है, पहाड़ पर अपने अंडे दे आती है और खुद सर्दियों के दिनों में मैदानी इलाके में आ जाती है। कूंज सिमरन के जरिए, आवाज के जरिए अपने अंडों की संभाल करती है अगर वह उन्हें याद न करे तो उसके अंडे सड़ जाते हैं। कोई महात्मा मुर्गी की मिसाल होते हैं, जैसे मुर्गी अपने अंडों पर बैठकर अपने बच्चों को गर्माहट देकर पालती है उसी तरह महात्मा अपने आस–पास के सेवकों की परवरिश करते हैं। कोई महात्मा कछुए की मिसाल होते हैं, जैसे कछुआ अंडे खुष्की में देता है और स्वयं पानी में रहता है, अपने ध्यान के साथ उन अंडों को पकाता है अगर उनका ध्यान न रखे तो अंडे सड़ जाते हैं।

इसी तरह महात्मा थोड़ी बहुत दूर अपने सेवकों की परवरिश करते हैं, शिष्यों की संभाल करते हैं। ऊँचे दर्जे के महात्मा कूंज की मिसाल होते हैं। वे निगाह के साथ ही, साँस–साँस के साथ ही अपने सेवकों की संभाल करते हैं। ऐसे महात्मा परम सन्त के लिए दूर–नजदीक का कोई फर्क नहीं होता। उनका सेवक चाहे कहीं भी हो, वहीं उसकी संभाल करते हैं।

जो सेवक कमाई करते हैं उन्हें भी पता होता है कि गुरु और सेवक के लिए दूरी का कोई फर्क नहीं होता। महात्मा को स्थूल शरीर कहीं भी ले जाने के लिए किसी साधन की जरूरत पड़ती है और इसे सुख–दुख भी है लेकिन महात्मा का असली रूप 'शब्द' है। उसे समुंद्र की गहराईयां दूर नहीं कर सकती उसे बाहर के किसी साधन की जरुरत नहीं पड़ती। कबीर साहब कहते हैंः

लाख कोस जो गुरु बसैं, दिजै सुरत पठाय।
सबद तुरी असवार होइ, पल पल आवै जाय।।
जो गुरु बसैं बनारसी, सिष्य समुन्दर तीर।
एक पलक बिसरै नहीं, जो गुन होय सरीर।।

त्यों सतगुर सिख प्रीत हर हर की गुर सिख रखै जीअ नाली।।

जैसे कूंज अपने बच्चों को नहीं भूलती, साँस–साँस के साथ मैदानी इलाके में बैठी हुई भी उन्हें याद करती है उसी तरह गुरु का अपने शिष्यों के साथ प्यार होता है, वे हमेशा उनकी बेहतरी के लिए सोचते हैं और हमेशा उनके लिए रास्ता साफ करने में लगे रहते हैं। अगर हमारा कोई सच्चा मित्र या रिश्तेदार है तो वह हमारे सतगुरु ही हैं। दुनिया के सब रिश्ते गर्ज से बंधे हुए हैं, गुरु का रिश्ता बेगरज है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

सुखी बसै मोरो परिवारा, सेवक सिख सभै करतारा।।

जिस तरह हम **गुरु महिमा** बयान नहीं कर सकते कि वे करण–कारण है, समर्थ हैं, उसी तरह अगर हम गुरु का प्यार देख लें, समझ लें तो गुरु शिष्य का प्यार भी अटूट प्यार है। गुरु के दिल में सेवक के लिए जो प्यार है अगर सेवक भी उसे समझ ले तो भजन–अभ्यास और सब कुछ उसी में आ जाता है।

हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर आपको यह पता लग जाए कि सन्त हमें कितना प्यार करते हैं तो आप खुशी से नाच उठेंगे।'' महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन–अभ्यास नहीं होता तो आप सन्तों के साथ सच्चा इज्जत भरा प्यार करें ताकि अन्त समय में जिस तरफ आपका झुकाव होगा, आप उसी तरफ जाएंगे क्योंकि आपकी आँखों के आगे सन्त ही आएंगे। सन्त आपको मालिक के पास ले जाएंगे।''

जैसे काती तीस बत्तीस है विच राखै रसना मास रत केरी।।
कोई जाणो मास काती कै किछ हाथ है सभ वसगत है हर केरी।।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि जिस तरह बत्तीस दाँत जीभ की रक्षा करते हैं, दाँत भी जीभ को नहीं काट सकते। यह सब कुछ परमात्मा ने

अपना खेल बनाया हुआ है। इसी तरह अगर हमारे ऊपर कोई दुख मुसीबत आती है या हम किसी मुश्किल में फँसे हुए हैं तब अगर हम गुरु को प्रेम-प्यार से याद करते हैं तो वे उसी वक्त आकर हमारी सहायता करते हैं, हर मसले का हल करते हैं।

मैं कई बार बाबा बिशनदास जी की कहानियाँ बताया करता हूँ। मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो शब्द' का भेद मिला था, वे ब्रह्म तक पहुँचे हुए थे, बहुत अच्छे थे, मेरे दिल में उनके लिए बहुत इज्जत है। मैं यह भी बताया करता हूँ कि वे किस तरह मुझे सुबह तीन बजे उठाया करते थे।

सन् 1947 में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जंग लगी, मुझे उस जंग में जाने का मौका मिला, यह लड़ाई कश्मीर में हुई थी। दुश्मनों ने हमारी कंपनी को घेर लिया, हमारा कमांडर बहुत घबराया। आमतौर पर कई बार ऐसी मुसीबतें आती थी। मेरे कमांडर मेरी अच्छी इज्जत करते थे, वे मुझसे पूछने लगे, ''हाँ भई, अब बताओ क्या यह घेरा टूटेगा या रहेगा?'' मैंने कहा, ''हाँ, मैं आपको बताता हूँ।'' मैं कुछ वक्त मोर्चे के अंदर बैठा, बाबा बिशनदास जी ने बताया कि हौंसला रखें, आपका घेरा टूटने वाला है। मैंने उठकर बेझिझक कह दिया कि हमारा घेरा टूटने वाला है। दो मिनट बाद ही दुश्मन अलग-अलग हो गए और हम सही-सलामत पीछे मुड़ आए।

त्यों संत जना की नर निंदा करेंह् हर राखै पैज जन केरी।।

अब दुनियादार क्या करते हैं, जब महात्मा संसार में आते हैं तो दुनिया उनकी निन्दा करती है। निन्दा करने वालों का कोई न कोई मतलब होता है। यह दुनिया एक बाजार है, इसमें लोग हर किस्म का सौदा बेचते हैं। एक पिता अपने बेटे के साथ बाजार गया, उन्हें देखकर एक आदमी ऊँची-ऊँची गालियां निकाल रहा था। लड़के ने कहा कि देखो पिता जी, वह आदमी हमें गाली निकाल रहा है। आप उसे कुछ जवाब दें। पिता ने कहा, ''बेटा, बाजार में हर कोई अपना-अपना सौदा बेच रहा है।'' पिता

बुद्धिमान था उसने गालियों की तरफ ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने बेटे को समझाया। इसी तरह सन्त–महात्माओं को पता है कि यहाँ दुनिया में लोग अपना–अपना सौदा बेच रहे हैं, हर एक की ड्यूटी लगी हुई है। अगर महात्मा पूरे हैं तो वे कभी किसी की निन्दा सुनकर उसे निन्दा में जवाब नहीं देते।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि ओछा आदमी हमेशा अपनी सफाई पेश करने में लगा रहता है और समझदार आदमी वक्त की इंतजार में होता है और सोचता है कि वक्त इसे अपने आप ही बता देगा। महात्मा की चुप्पी ही जवाब होता है। महात्मा का ऐसा दिल नहीं होता अगर एक आदमी गंदगी फैला रहा है तो वे उसकी नकल करें। महात्मा तो नाम जपने और नाम जपवाने के लिए आते हैं, वे बुरे कर्मों से बचे होते हैं और हमें बुरे कर्मों से बचाने के लिए आते हैं। गुरु साहब कहते हैः

जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै।।

अगर कोई महात्मा की निन्दा करता है तो महात्मा लोगों से यह नहीं कहते कि आप हमारी शोभा करें या हमारे इश्तिहार निकालें। महात्मा तो परमात्मा की भक्ति करते हैं और हमें भी परमात्मा की भक्ति करने के लिए कहते हैं। उनकी रक्षा परमात्मा करते हैं, परमात्मा संसार में उनकी खुशबू फैलाते हैं।

आप इतिहास पढ़कर देख लें, दुनिया ने महात्माओं के साथ बुरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया लेकिन आज उनकी कौम के लोग अपने गले में सूली जैसा निशान डालकर फिरते हैं, उन्हें प्यार से याद करते हैं। सूली पर चढ़ने से उनकी इज्जत कम नहीं हुई बल्कि उन्हें ज्यादा लोग याद करते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी की हिस्ट्री में आता है कि जब वे नौ साल के थे तो उस वक्त की हुकूमत ने उनके पिता का कत्ल किया। उनके पीछे फौज लगाकर रखी, उनका घर बार भी लूटा। उनके चार बच्चे शहीद किए

और उनकी माता को भी शहीद किया। उन्होंने पंजाब और राजस्थान की जिस धरती पर पैर रखा आज वहाँ धर्मस्थान बने हुए हैं, लोग प्यार से उनकी इज्जत करते हैं।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी दक्षिण की तरफ जाते हुए राजस्थान से गुजरे। जाते हुए उन्होंने रियासत जोधपुर में एक मुसलमान के घर रात काटी। मुसलमान अभी भी वह चारपाई संभालकर बैठे हैं। सिक्खों ने कई लाख रूपये देने की पेशकश की कि यह चारपाई हमारी कौम की है, हमारे पास होनी चाहिए लेकिन वह कहने लगे कि यह चारपाई हमारे बुजुर्गों की संभाली हुई चीज है, यह एक महात्मा की निशानी है। उस चारपाई को उन्होंने बहुत इज्जत से रखा हुआ है। आप देखें कि महात्मा ने सिर्फ अपनी पीठ ही उस चारपाई पर लगाई थी जबकि उस समय वहाँ की गवर्नमेंट ही उनका विरोध करती थी।

भाई मत कोई जाणो किसी कै किछ हाथ है सभ करे कराया।।

जरा मरा ताप सिरत सांप सभ हर कै वस है,
कोई लाग ना सकै बिन हर का लाया।।

ऐसा हरनाम मन चित नित ध्यावों,
जन नानक जो अंती औसर लए छडाया।।

गुरु साहब कहते हैं कि हमें ऐसे सतगुरु से प्यार करना चाहिए, उनका दिया हुआ नाम जपना चाहिए।

जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ।।

हमें गुरु का दिया हुआ नाम जपना चाहिए, नाम के साथ प्यार करना चाहिए क्योंकि अंत समय में सतगुरु ने ही हमारी रक्षा करनी है। हम महात्मा की शिक्षा का पालन करें और अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

बिन बोलयां सब कुछ जांणदा

किसी मालिक के दो नौकर थे। एक नौकर मालिक के आने पर उसकी जी हुजूर करता और उसके आगे पीछे होता कि मालिक कहे कि यह तो बहुत ही अच्छा और काबिल है। जब मालिक किसी तरफ चला जाता तो वह कोई कारोबार नहीं करता, सो जाता था। दूसरा नौकर ऐसा था चाहे मालिक हो या न हो वह सारा कारोबार बहुत श्रद्धा से करता था कि मेरे मालिक का काम बिगड़ न जाए। आप सोचकर देखें कि मालिक किस नौकर पर खुश होगा? जो काम करता है या जो नौकर उसके आगे–पीछे घूमता है। वह उस नौकर को कहता तो कुछ नहीं लेकिन उस नौकर से खुश नहीं हो सकता।

कई ऐसी आत्माएं होती हैं कि सतगुरु पास हों या न हों वे श्रद्धा–प्यार से उसे हाजिर–नाजिर समझकर भजन–सिमरन करती हैं, अपनी जिंदगी को पवित्र रखती हैं। उन्हें पता है कि हमारे सतगुरु सर्वव्यापी हैं, दिलों की जानते हैं और हमें देख रहे हैं।

अगर पाँच साल का बच्चा खरबूजे या आमों के पास बैठा हो तो हम दो पैसे का आम भी नहीं तोड़ सकते। हम सोचते हैं कि इंसान का बच्चा देख रहा है इसी तरह हम परमात्मा से पाँच साल के बच्चे जितना भी डर नहीं रखते। उसके अंदर रहते हुए हम कौन–कौन सी ठगियां–बेईमानियां नहीं करते, हम सोचते हैं कि यहाँ कौन देख रहा है?

महात्मा कहते हैं कि हम गुरु के सामने जाकर भी यह कह देते हैं कि हम तो बहुत अभ्यास करते हैं , सच्चे–सुच्चे हैं। वे सब जानते हैं, आप कहते हैं:

बिन बोलयां सब कुछ जाणंदा

जो बिना बोले सब कुछ जानता है, आप उसके सामने क्या बोल सकते हैं लेकिन जब हमारी आँख खुल जाती है तो हमें पता चल जाता है और वह अंदर प्रकट हो जाता है। हम उस पर ऐतबार करते हैं फिर हम उसके आगे अपने आपको यह नहीं कह सकते कि हम अच्छे हैं।

***

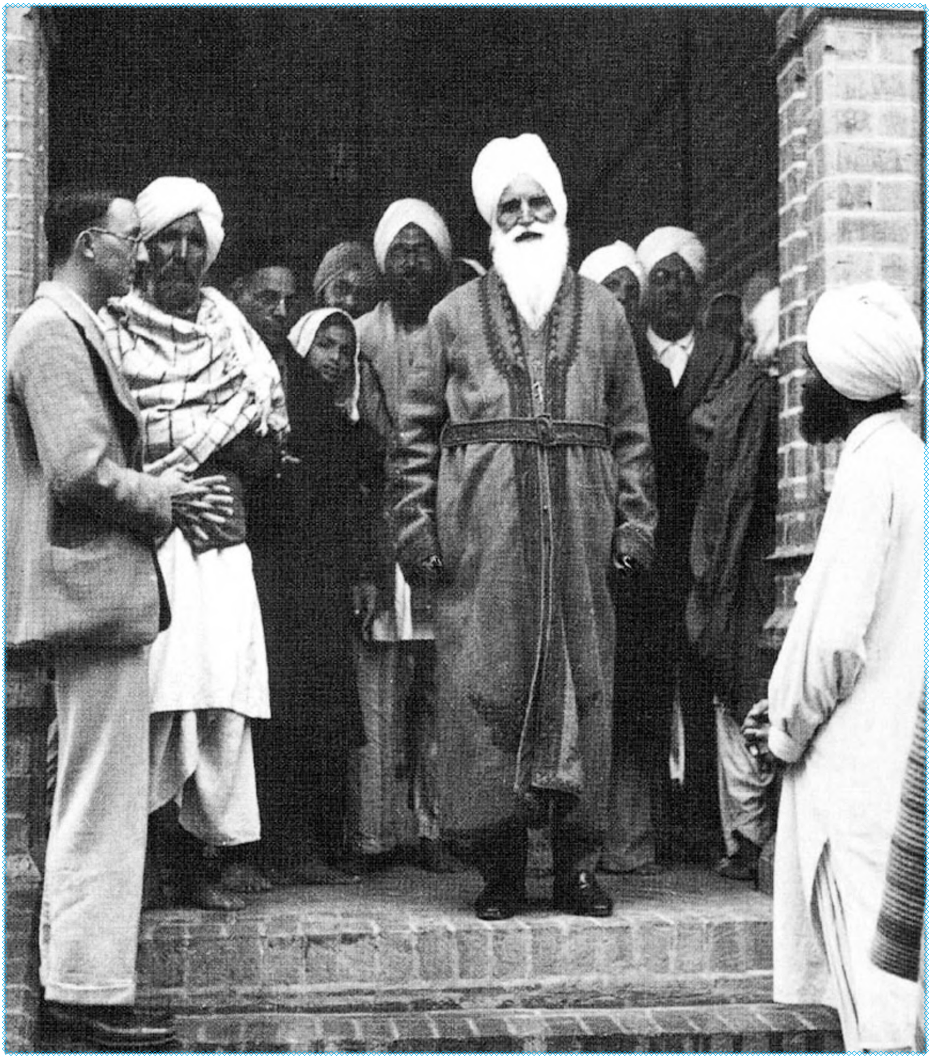

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कृपाल अमृत

28 अक्टूबर 1984 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

***एक प्रेमी**ः– क्या तीसरी आँख पर सिमरन करने की काबलियत ज्यादा मेहनत, गुरु की दया और ब्रह्मचारी जीवन का पालन करने से होती है या इसके लिए किसी और गुण की जरूरत है?*

बाबा जीः–हाँ भई, करनी और दया दोनों साथ–साथ चलती हैं अगर हम करनी करते हैं तो सन्त जरूर दया करते हैं, इसमें कोई शक नहीं। ब्रह्मचारी जीवन के शारीरिक बहुत फायदे हैं और रूहानियत में तो बेअंत ही फायदे हैं। अगर बच्चा स्कूल में दिलचस्पी रखता है, पढ़ाई करता है मेहनती है और अपने टीचर की इज्जत करता है तो टीचर उस बच्चे की तरफ अपनी पूरी तवज्जो देता है और उसे दूसरे बच्चों से ज्यादा पढ़ाने और सिखाने की कोशिश करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम करनी करें लेकिन गुरु दया न करे फिर भी कुछ नहीं बनता चाहे शिष्य जितना मर्जी जोर लगा ले। सन्त–सतगुरु जिन्होंने 'नाम' दिया होता है वे बेइंसाफ नहीं होते।''

महाराज सावन सिंह जी का वाक है , ''जिसके खेत या स्टोर में मजदूर काम कर रहे हैं, उस मालिक को फिक्र है कि इन्हें किस वक्त खाना देना है, किस वक्त तनख्वाह देनी है। अगर एक दुनियावी आदमी हमारी मजदूरी नहीं रखता तो गुरु जिनके अंदर परमात्मा प्रकट हैं वे किस तरह हमारी मेहनत रख सकते हैं।''

मैं अपने बचपन की एक घटना बताया करता हूँ। उस वक्त मेरी उम्र तेरह–चौदह साल की थी। मैं एक नहर के किनारे चला आ रहा था, एक बुजुर्ग वकील साईकिल पर जा रहा था। पहले तो वह मेरे पास से गुजरा

लेकिन आगे जाकर उसने साईकिल खड़ी कर दी और वह मुझसे कहने लगा कि बेटा, मैं तुझसे एक सवाल करता हूँ अगर तुम बुरा न मानों तो मुझे जवाब देना। मैंने कहा, ''मैं जवाब दूँगा, मैं जितना जानता हूँ उतना जरूर बताऊंगा।'' वह कहने लगा कि मैंने एक किताब में पढ़ा है अगर कोई मालूम करने वाला हो तो जो इंसान के दिल में है, वह उसके चेहरे पर जरूर मालूम हो जाता है। मुझे तुम्हारा चेहरा ऐसा मालूम हो रहा है कि तुम एक भक्त आदमी हो, भक्ति करते हो। मैंने उसे हँसकर कहा, ''मैं अभी तो छोटा हूँ, मैं भक्त तो नहीं हूँ लेकिन भक्ति की खोज में हूँ।'' वह बहुत खुश हुआ।

इसी तरह जो लोग काम से ग्रसित हैं, बेशक आपको देखने में उनकी सेहत अच्छी नजर आती है लेकिन जानकार लोग उनकी आँखें और चेहरा देखकर फौरन पहचान लेते हैं कि इस इंसान में यह कमी है।

औरतों और मर्दों को न तो ब्रह्मचारी जीवन का पाठ पढ़ाया जाता है और न ही उनके माता–पिता का इस तरफ ख्याल होता है। माता–पिता ने भी ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने की कम ही कोशिश की होती है इसलिए आगे उनके बच्चों पर भी यही असर होता है हालाँकि उनके अंदर पूरा बीरज नहीं बना होता फिर भी वे पहले ही बीरज गिराने लग जाते हैं, गैरकुदरती तरीके भी अपनाने लग जाते हैं।

आप खुद ही सोचकर देख लें कि उनकी सेहत कैसे ठीक हो सकती है? उनका मन तीसरे तिल पर कैसे एकाग्र हो सकता है? उनकी सुरत किस तरह ऊपर चढ़ सकती है? जब ख्याल ही पवित्र नहीं तो मन कैसे पवित्र हो सकता है? जब हमारा मन ही पवित्र नहीं तो वह तीसरे तिल पर कैसे खड़ा हो सकता है? अगर लोहे पर जंग लगा हुआ है तो मैग्नेट उसे किस तरह खींचेगा? 'शब्द' मैग्नेट का ही काम करता है, मन और आत्मा को तभी ऊपर खींचता है जब ये पवित्र हो जाते हैं।

आजकल आमतौर पर डॉक्टर अखबारों में बड़ी इश्तिहारबाजी करते हैं कि जिसने गई हुई जवानी, खोई हुई ताकत वापिस प्राप्त करनी है वे हमें मिलें। आमतौर पर नौजवान लोग ऐसी दवाईयां लेकर अपने अंदर और भी गर्मी पैदा कर लेते हैं। गर्मी पैदा होने के कारण उनका मन और भी विषय-वासना के लिए भड़क उठता है।

मैं 16 तारीख को दिल्ली से सतसंग करके वापिस आ रहा था तो मुझे रास्ते में गंगानगर एक-दो घंटे ठहरने का मौका मिला। महाराज जी का कोई खास सतसंगी चोला छोड़ गया था इसलिए मुझे वहाँ ठहरना पड़ा। वहाँ दिल्ली से एक डॉक्टर दवाई देने के लिए गंगानगर आया हुआ था। डॉक्टर साहब ने भी वहाँ तश्रीफ रखी हुई थी, उसने अखबारों में काफी इश्तिहारबाजी की थी। मैंने भी वह अखबार पढ़ा था।

देखने में तो वह डॉक्टर जरूर हट्टा-कट्टा नजर आ रहा था लेकिन जब मैं उसकी तरफ देखता तो वह फौरन आँखें बंद कर लेता था। मैंने सोचा कि इसे नींद आ रही होगी। जब उसे पता लगा कि मैं एक सन्त हूँ तो वह मुझसे कहने लगा कि मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूँ। जब उसने अकेले में बात की तो अपना रोग बताते हुए कहा कि मुझे यह बड़ा ही रोग लगा हुआ है अगर औरत पास न हो तो मैं हाथ से बीरजपात करता हूँ। मेरी उम्र साठ साल है लेकिन मैं इस बीमारी को नहीं छोड़ सका। मैंने कहा, ''अफसोस की बात है कि जिसकी खुद की जवानी खराब है, वह दूसरों को क्या जवानी देगा? तुम्हारा यह प्रचार गुमराह करने वाला है।'' उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था, वह शर्मिंदा हो गया। कबीर साहब कहते हैंः

नार पुरख सब ही सुनों, सतगुरु जी की साख।
बिख फल फले अनेक है, मत कोई देखो चाख।।

यह सिर्फ मर्दों के लिए ही नहीं बल्कि औरतों के लिए भी उतना ही जरूरी है। जिन्होंने बचपन से ही शरीर को अच्छा संभाला हुआ है, बीरजधन

को अच्छी तरह से संभाला हुआ है, उनके अंदर कुदरती ही जोत जल पड़ती है। उनके लिए नाम प्राप्त करना इस तरह है जैसे पेट्रोल को तीली दिखानी होती है। कबीर साहब कहते हैंः

कामी कबहुं न गुरु भजै, मिटै न संसय सूल।।
इंद्री केरे बस परा भुगतै नरक निसंक।।

कामी आदमी कभी भक्ति कर ही नहीं सकता, उसके दिल में हमेशा डर लगा रहता है कि मैं बुराई कर रहा हूँ, यह बुराई कब छूटेगी। वह इन्द्रियों के बस में आकर अपना आप खो बैठता है।

एक प्रेमी:– *मैंने अनुराग सागर में पढ़ा है कि यह दुनिया जिसमें हम रह रहे हैं, यह काल की रचना है। मैंने सन्तबानी मैगजीन में एक जगह यह भी पढ़ा है कि जो लोग भगवान में विश्वास नहीं करते, उनसे यह पूछें कि ये सूरज, चाँद किसने बनाए हैं? यह पढ़कर मुझे समझ नहीं आया कि ये सब भगवान के बनाए हुए हैं या काल की रचना है?*

बाबा जी:– हाँ भई, किसी महात्मा की बानी पढ़ने से पहले हमें काफी कुछ सोचना पढ़ता है अगर हम पूरी तरह तैयार होंगे तभी हम सन्तों की बानी और सतसंग को समझ सकते हैं। यह इस तरह है कि एक पंडित कबीर साहब के साथ चर्चा करने के लिए आया। वह कहने लगा कि भगवान नहीं है, मैं भगवान पर विश्वास नहीं रखता। ये सूरज, चाँद, सितारे अपने आप ही उगते हैं। कबीर साहब ने उससे कहाः

ओइ जु दीसहि अंबरि तारे, किनि ओइ चीते चीतनहारे।।
कहु रे पंडित अंबरू का सिउ लागा, बूझे बूझनहारू सभागा।।

पंडित तुम यह बताओ कि आसमान किसके आसरे खड़ा है? पंडित को यह सवाल समझ नहीं आया। कबीर साहब ने उसे बताया कि तुम भगवान में विश्वास नहीं करते लेकिन काल को हुक्म देने वाले भी भगवान ही हैं। अगर काल ने सेवा की तभी भगवान ने उसे हुक्म दिया। चाँद, सूरज और सितारे सब कुछ काल की रचना है, उसके दायरे में हैंः

खंड पाताल दीप सभि लोआ, सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ।।
तृहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा।।

सन्त हमें इन चीजों से ऊपर उठाकर काल की नगरी से ले जाना चाहते हैं, वे हमारी डोरी ऊपर सच्चखंड में 'शब्द–नाम' के साथ बाँधते हैं। इसलिए सन्त कमाई पर जोर देते हैं कि सतसंगी को कोई भ्रम या वहम न रह जाए। सतसंगी खुद अंदर जाकर देख ले कि नक्षत्र, तारे, सूरज और चन्द्रमा कितने नीचे रह जाते हैं और हमारा सफर इससे कितना आगे है।

मैंने इस बार सन्तबानी आश्रम, अमेरिका में कई सतसंग अंदर की चढ़ाई के बारे में किए हैं अगर आप उन्हें समझें तो आपको पता चलेगा कि ये चीजें कितनी नीचे हैं और हमने कितना ऊपर जाना है।

एक प्रेमीः– *यहाँ आश्रम में जहाँ से पानी निकाला गया है, क्या उसके साथ कोई कहानी जुड़ी हुई है?*

बाबा जीः– सच्चाई तो यह है कि जब इस गरीब आत्मा पर उस दयालु परमपिता परमात्मा कृपाल ने दया की तब तीसरे दिन आकर खुद ही अंदर से निकाला था। आपने जब सुरत को नीचे खींचा तब मैंने यही कहा, ''आप मीठे हैं।'' यह हैंडपम्प उसी जगह लगाया गया है जहाँ उनकी कार के टायर के निशान थे। यह हुजूर का हुक्म था कि वक्त आने पर यहाँ से मीठा पानी निकलेगा और वास्तव में वहाँ से मीठा पानी निकला।

बेशक कितना ही मकान बना, फर्श लगा लेकिन हमने उस जगह की निशानी खत्म नहीं की। जिस दिन पानी निकलना था उस दिन मैंने खुद जाकर निशान बताया कि भई असली जगह यह है, उसका नाम कृपाल अमृत रखा। आज आपको उस पानी से हलवा बनाकर खिलाएंगे। उस पानी से हलवा बहुत स्वाद बनता है। आप रोज चाय पीते हैं, उसमें कम दूध डालना पड़ता है। इस पानी के निकलने के कारण हमारा दूध का खर्च काफी कम हो गया है।

वे दयालु दया के समुंद्र थे, उनकी महिमा बयान नहीं की जा सकती, उन्होंने दोनों हाथों से नाम की दात लुटाई। वे जीव भाग्यशाली थे जिन्होंने उनके दर्शन किए और दया प्राप्त की। आज भी वे दोनों हाथों से अपनी दया लुटा रहे हैं।

***एक प्रेमी*:–** *हम किस तरह अपने बच्चों को प्यार से अनुशासन में रख सकते हैं, इस बारे में आप हमें कुछ बताएंगे?*

बाबा जी:– मैं बच्चों के बारे में बहुत कुछ कह चुका हूँ और प्रेमियों ने काफी सारी कहानियाँ अलग से भी छापी हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप वहाँ से देखेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि बच्चों पर माता–पिता का क्या असर होता है। अगर माता–पिता चाहें तो बच्चे को अच्छे से अच्छा बना सकते हैं अगर माता–पिता खुद कमाई करते तो वे बच्चे को सन्त पदवी तक पहुँचा सकते हैं।

मैं सूफी सन्त फरीद साहब की एक मशहूर कहानी बताया करता हूँ कि उनकी माता बहुत कमाई वाली थी। उनकी सुरत अंदर जाती थी, वे परमात्मा की पूरी भक्त थीं और चाहती थीं कि मेरा बच्चा भी भक्ति का धन प्राप्त करे इसलिए उन्होंने बच्चे की छोटी उम्र में उसे कहना शुरु कर दिया कि बेटा, खुदा की भक्ति कर।

आपको पता ही है कि बच्चे स्वाभाविक ही जो बात मुँह में आ जाए वह कह देते हैं इसलिए बालक फरीद ने कहा, ''खुदा कौन सा चीनी दे देंगे?'' छोटे बच्चे को चीनी बहुत मीठी लगती है। उनकी माता ने कहा, ''अगर तुम भक्ति करोगे तो खुदा जरूर चीनी देंगे।'' कुछ दिनों तक तो माता को उन्हें बिठाना पड़ा। माता फरीद जी के ऊपर कपड़ा ओढ़ देती और इधर–उधर घूमती रहती। घूमते–घूमते थोड़ी देर बाद धीरे से आकर एक कटोरी में चीनी डालकर बोरी के नीचे रख देती। जितनी देर मुनासिब समझती उतनी देर अपनी तवज्जो देकर बिठाकर रखती। बाद में उन्हें

उठाती और कहती, ''देख बेटा, खुदा चीनी रख गए हैं।'' बालक फरीद जब खाते तो उन्हें चीनी मीठी लगती। दो-चार दिन तो माता को मुशक्कत करनी पड़ी लेकिन बाद में मीठे के लालच में फरीद खुद ही बोरी उठाने लगे और कहते कि माता, मैं काम बाद में करूंगा पहले खुदा से चीनी ले लेता हूँ। धीरे-धीरे सुरत अंदर लगने लगी। जब अंदर नाम का रस और मिठास आई तो फरीद ने अपनी बानी में लिखाः

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ माँझा दुधु।।
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु।।

माता, मैं मानता हूँ कि चीनी, शहद और भैंस का दूध मीठा है लेकिन जो रस और स्वाद नाम में है वह और किसी में नहीं।

मेरी माता मुझे बचपन में एक कहानी सुनाया करती थी कि किस तरह एक माता ने अपने बच्चे को फाँसी के तख्त पर चढ़वा दिया और उस बच्चे ने अपनी माता को सजा दी थी कि तुम्हारी दया-मेहर से ही मैं आज फाँसी के तख्त पर चढ़ा हुआ हूँ। वह बच्चा थोड़ी बहुत चोरी करके लाता तो उसकी माता उससे कहती कि तू बहुत अच्छा काबिल है और चोरी करके ला। माता उस बच्चे को शह देती रहती, वह बहुत बड़ा डाकू बन गया। एक दिन किसी के यहाँ चोरी करने गया तो उससे कत्ल हो गया, उसे पुलिस ने पकड़ लिया।

आखिर एक दिन बंदा कानून के शिकंजे में आ ही जाता है। जब उसे फाँसी की सजा सुनाई गई तो उससे पूछा गया कि तुम आखिरी समय में किसी से मिलना चाहते हो तो मिल सकते हो। उसने कहा कि मैं किसी से नहीं मिलना चाहता अगर आप मुझे मेरी माता से मिलवा दें तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी।

जेलवालों ने उसकी माता को बुलवाया और कहा कि तुम्हारा लड़का तुमसे बात करना चाहता है। उसकी माता को बहुत खुशी हुई कि पता नहीं

बच्चा आज कितनी अच्छी बात बताएगा या उसने कहीं धन छिपाकर रखा होगा तो उसके बारे में बताएगा। लड़के ने माता से कहा कि तुम सलाखों के नजदीक अपना कान करो मैं कान में तुम्हें एक बात बताऊंगा। माता ने जब कान सलाखों के नजदीक लगाया तो लड़के ने मुँह बाहर निकालकर उसके कान को काट लिया और कहा, ''आज मैं तुम्हारी शह और तुम्हारे उपदेश के कारण ही फाँसी के तख्त पर चढ़ रहा हूँ अगर तुम मुझे रोकती और बुरा कहती तो मैं अपना जीवन न गँवाता।''

मुझे अच्छी तरह याद है कि मुझे बचपन से ही लोगों के घरों में जाने और दूसरे लड़कों के साथ खेलने की आदत नहीं थी। मेरी माता मुझ पर नजर रखती थी और कहती थी कि ध्यान रखना अगर तुम दूसरे लड़कों के साथ मिलकर कोई बुराई करोगे तो मैं उनके माता-पिता को बता दूँगी और तुम्हें भी सजा दूंगी क्योंकि मैं नहीं चाहती कि तुम बुरे लड़के बनो और अन्त में मेरे कान काट दो। मुझे बुजुर्ग माता की शिक्षा अच्छी तरह याद है।

महाराज सावन सिंह जी अपने ननिहाल की एक घटना बताया करते थे कि वहाँ एक मियाँ-बीवी रहते थे। अगर उनका बच्चा किसी की कोई चीज उठाकर ले आता तो वे उसे शाबाशी देते अगर कोई उनके घर शिकायत करने आता तो वे उससे लड़ते थे।

आप देख सकते हैं कि फरीद साहब की माता ने अपने बच्चे को सन्त बनाया और दूसरी माता ने अपने बच्चे को फाँसी के तख्त पर चढ़ाया। सन्त हमेशा कहा करते हैं, ''अगर आप अपने बच्चों को नेक बनाना चाहते हैं तो आप खुद नेक बनें।'' बच्चों पर माता-पिता का बहुत असर होता है।

महाराज सावन सिंह जी ऐबटाबाद का जिक्र किया करते थे कि वे जिस घर में रहते थे, वहाँ एक शराबी-कबाबी भी रहता था। उसने महाराज सावन सिंह जी के बच्चों को मीट-शराब का सेवन करने के लिए बहुत जोर लगाया लेकिन उन बच्चों ने ऐसी हरकत नहीं की।

एक दिन उसने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''बाऊ जी, आपने बच्चों को बहुत ज्यादा पक्का किया हुआ है। मैंने बहुत जोर लगा लिया लेकिन आपके बच्चे मेरे बच्चों के साथ मिलकर कभी कुछ नहीं खाते और न ही उनके साथ खेलते हैं।'' महाराज जी ने कहा, ''वक्त आने पर तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारे बच्चों पर इन चीजों का कितना बुरा असर होगा।'' जब वह आठ-दस साल के बाद महाराज जी से मिला तो उसके बच्चे बदमाश हो गए थे और वह रो रहा था। वह महाराज जी से कह रहा था, ''मैंने आपके पास रहकर भी अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं की।''

कहने का भाव इतना ही है कि महाराज सावन सिंह जी का अपने बच्चों पर इतना असर था कि वे किसी के सिखाने से भी मीट-शराब की तरफ नहीं लगे और जो आदमी उन्हें सिखाने की कोशिश कर रहा था आखिर वह उनके पास आकर पछतावा करने लगा।

जब मैं पहले टूर पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया था तो पुलिस का चीफ मेरे पास आया, उसने महाराज कृपाल के भी दर्शन किए हुए थे। उसने सवाल किया, ''सन्त जी, बच्चों को क्या दें, माँ-बाप का बच्चों के लिए क्या फर्ज है?'' मैंने कहा कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दें अगर अच्छी शिक्षा है तो बच्चे माँ-बाप का नाम ऊँचा करेंगे, भूखे नहीं मरेंगे, इज्जत भी प्राप्त करेंगे और सही ढंग से धन कमा सकेंगे। अगर शिक्षा अच्छी न हुई तो उन्होंने अपनी इज्जत तो बर्बाद करनी ही है, माता-पिता की इज्जत भी बर्बाद कर देंगे और माता-पिता का दिया हुआ धन भी बर्बाद कर देंगे। यह जवाब सुनकर वह बहुत खुश और प्रभावित हुआ।

मैं आशा करता हूँ और हमेशा ही यह कहा करता हूँ कि माता-पिता द्वारा बच्चों को छोटी उम्र से ही अच्छी शिक्षा देनी चाहिए। आपको ये भोली आत्माएं मिली हैं इनका जीवन बनाना आपका पहला फर्ज है।

***

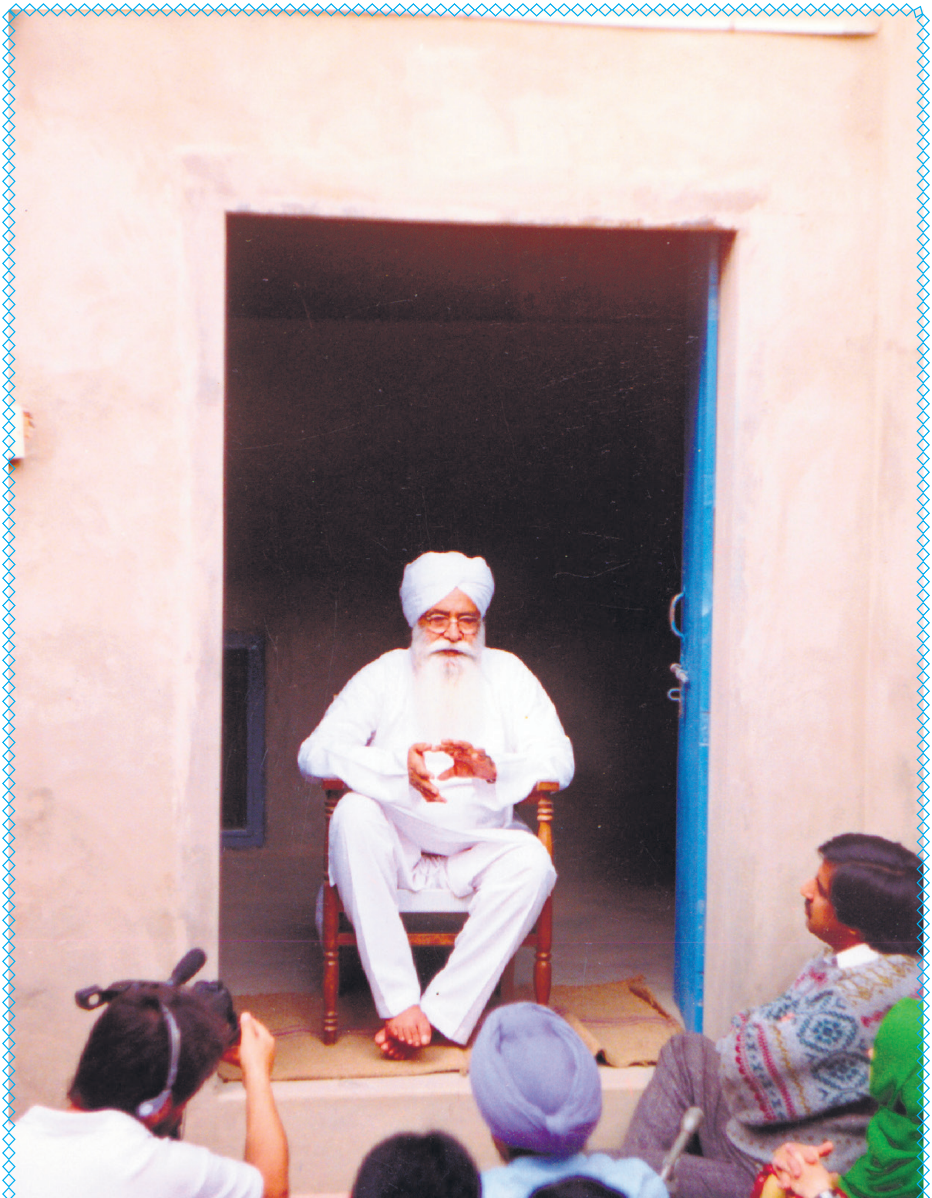

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले दिया संदेश

नाम की खुशबू

05 दिसम्बर 1986

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

हाँ भई, आपने इस जगह के बारे में काफी कुछ पढ़ा और सुना है। किसी भी जगह की कोई खास महानता इसलिए होती है कि वहाँ किसी पवित्र आत्मा ने अपने गुरु का सहारा लेकर और उनकी दया से उनका हुक्म मानकर वह काम किया होता है जिसके लिए चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इंसान का जामा मिलता है।

हम इंसानी जामें का फायदा तभी उठा सकते हैं अगर हम इसमें बैठकर प्रभु प्राप्ति या प्रभु की भक्ति करें जो हम किसी और जामें में नहीं कर सकते। सिर्फ इंसानी जामें में बैठकर ही हम प्रभु–परमात्मा से मिलाप कर सकते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''उन प्यारों का भी बहुत अच्छा भाग्य होता है जो गुरु चरणों के साथ अपनी लिव लगा लेते हैं, सच्चा प्यार प्राप्त कर लेते हैं।''

वह वक्त बहुत ही सुहावना था, जब मेरे गुरुदेव ने अपनी दया करके मुझे यहाँ अंदर बिठाया। यह जगह उनके हुक्म से ही बनाई गई थी और मैं उनके हुक्म से ही अंदर बैठा। यह उनकी दया थी कि जब उन्होंने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''अंदर झाँकना है।''

मैं ही तुम्हारे पास आऊँगा, तुम्हें मेरे पीछे आने की जरूरत नहीं। दुनियावी तौर पर भी नाम मिलने से पहले वे खुद ही आकर मुझसे मिले थे, यह उनकी ही दया थी। उन्होंने पच्चीस साल संदेश दिया कि देने वाले का क्या कसूर है? अब यह तो हमारी अपनी–अपनी भावना है, अपने बर्तन और अपने नजरिए का सवाल होता है।

जब इस गरीब आत्मा को उस शहन्शाह के दर्शन हुए तो उस वक्त आत्मा को पता चल गया था कि तुम्हें कुछ देने वाले आ गए हैं। बचपन से दिल में यही था कि कोई ऐसा शाह मिले जो परमात्मा का बनाया हो, नाम का खजांची हो। मेरा बचपन से ही गुरुबानी के साथ प्यार था। मेरे दिल में सन्तों, भक्तों और गुरुओं की बानी पढ़ने का शौक था।

कबीर साहब ने दुनिया के धनी को बादशाह कहकर बताया है कि जो दुनिया में ज्यादा धन–पदार्थ रखता है अगर उसके घर कोई गरीब चला जाए तो वह पीठ करके बैठ जाता है कि अब यह कुछ माँगेगा। अगर गरीब के घर कोई धनी आदमी चला जाए तो वह उसे आदर से बिठाएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''देखो प्यारेयो, प्रभु की कला को प्रभु ही जानते हैं हम अपने कर्मों के कारण इस संसार में गरीब बनकर आते हैं और अपने कर्मों के कारण ही इस संसार में अमीर बनकर आते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि वही इंसान निर्धन है जिसके पास नाम नहीं है।''

कहि कबीर निर्धन है सोई, जाकै ह्दय नाम न होई।।

परसों एक भजन बोला गया थाः

सावन शाह तों लै के भिच्छिया, झोलियाँ भरदा खाली।।

महाराज सावन सिंह जी नाम के शाह थे, महाराज कृपाल सिंह जी ने उनसे नाम की भिक्षा माँगी थी दुनिया की नहीं। वह भिक्षा इतनी बड़ी थी कि जिसने जो कुछ भी माँगा उन्होंने खाली झोली देखकर भर दिया लेकिन हमारी झोली तो दुनिया के सामान से पहले ही भरी हुई है। झोली भरने वाला कहाँ डाले? जिसने दुनिया की वस्तुएं माँगी उसे दुनिया की वस्तुएं दे दी लेकिन जिस आशिक ने उनका दीदार माँगा, उसे उनका दीदार मिल गया।

मैं बताया करता हूँ कि मैंने अपने गुरुदेव से कभी कोई दुनियावी चीज नहीं माँगी। मैंने तो बचपन से सिर्फ उन्हें ही माँगा और वे मुझे मिल गए।

मैंने फिर भी यह नहीं कहा कि आप मुझे दुनिया के सारे सुख दें या मुझे बुखार न चढ़े। यह उनकी मर्जी है वे मुझे सुखी रखें या मुश्किल में रखें। जब हमने उन्हें सब कुछ ही सौंप दिया तो उन्हें हमारा फिक्र है इसलिए मैंने अपने गुरु को ही माँगा था और वे मुझे मिल गए।

मैं सारे संसार में यही कहा करता हूँ कि देखो भई प्यारेयो, मैंने अपने गुरु से कोई दुनियावी चीज नहीं माँगी। मुझे जिस चीज की जरूरत थी उन्होंने वह चीज मुझे दी। अगर हम गुरु को माँगेगें तो वे सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाएंगे और वे जरूरत के मुताबिक अपने आप ही सारे काम करते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप यहाँ से यही प्रेरणा लेकर जाएंगे कि हम भाग्यशाली हैं जो हम परमात्मा के चुनाव में आए। गुरु परमात्मा ने इस संसार में शान्ति बरताने का बेड़ा उठाया होता है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम अपने अंदर से **नाम की खुशबू** ही लोगों को दें। अगर एक सतसंगी सौ इंसानों का सुधार करे तो एक मुल्क में कितने आदमी सुधर सकते हैं।

प्यारेयो, मैंने यह देखा है कि हिन्दुस्तान में लोग बीड़ी, शराब और चाय तक भी नहीं पीते थे। आजादी के बाद कंपनियों ने हर गाँव में जाकर लोगों को मुफ्त चाय पिलाई और बताया कि यह आपको दुकानों में मिलेगी। बीड़ी, सिगरेट बनाने वाली कंपनियों ने मुफ्त बीड़ी, सिगरेट बाँटी और शराब बनाने वाली कंपनियों ने मुफ्त शराब बाँटी।

आज आप देखें कि ये चीजें कितनी फैल चुकी हैं, वे लोग ऐसा प्रचार करके बुरी चीजें फैला सकते हैं तो इसी तरह अगर एक सतसंगी अपने अंदर से दूसरों को **नाम की खुशबू** दे और बताए कि देखो भई प्यारेयो, मेरा इस तरह फायदा हुआ है अगर आपकी समझ में आता है तो आप भी फायदा उठा सकते हैं। आप देख लें कि इस दुनिया का कितना सुधार हो सकता है।

***

धन्य अजायब

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

07, 08, 09, 10 व 11 जनवरी 2026

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम :

04, 05, 06, 07 व 08 फरवरी 2026

27, 28 फरवरी व 01 मार्च 2026

01, 02, 03, 04 व 05 अप्रैल 2026

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926